NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
<u>NEW DELHI</u>

The following guideline is only for those who have shortlisted for appearing in the Joint Entrance Examination for admission to Three Year Diploma course in Dramatics in the National School of Drama, New Delhi and the One Year Certificate course at the four centres of NSD.

The interview will have the following sections:-

Written test
Practical Test
Analytical capacity Test

1. Written Test:

This is to test the student's critical aptitude and power of expression in Hindi or in English.

2. Practical Test:

a) One dramatic passage to be prepared and enacted. This is to be chosen from among the passages provided.

b) One dramatic passage of his/her choice to be enacted in any language.

c) Ability to sing/play instrument and to dance/movement/yoga.

3. Oral Test:

This is to test:

a) General Knowledge regarding theatre and other performing arts.

b) The candidate's ideas and the capacity to express them.

c) Understanding & Analysis from among the list of plays provided. The candidates should be prepared to discuss any two plays mentioned in the list enclosed.

****

READING MATERIAL

S. No.	Writer Name	Play Name
1.	Kalidasa	Abhijnanasakuntalam
2.	Bhasa	Karnabharam / Madhyam Vyayoga
3.	Rabindra Nath Tagore	Dak Ghar
4.	Jaishankar Prasad	Dhruvswamini
5.	Bijan Bhattacharya	Nabanna
6.	Mohan Rakesh	Adhe Adhure
7.	Badal Sircar	Baaki Itihaas
8.	Vijay Tendulkar	Sakharam Binder
9.	C.S. Kambar	Jo Kumaraswamy
10.	Girish Karnad	Nagmandal
11.	Mahesh Elkunchwar	Virasat
12.	Satish Alekar	Mahanirvan
13.	Kavalam Narayan Panikkar	Theyya Theyyam
14.	Balwant Gargi	Loha Kutt
15.	Arun Sharma	Ahar
16.	Sanjay Pawar	Koan Mhanate Takka Dila?
17.	Sophocles	King Oedipus
18.	William Shakespeare	Macbeth
19.	Henrik Ibsen	A Doll's House
20.	Anton Chekhov	Three Sisters
21.	Bertolt Brecht	Caucasian Chalk Circle
22.	Moliere	The Bourgeois Gentleman/ Kuava Chale Hans Ki Chaal/ School for Wives/Bibion Ki Madrasa
23.	Arthur Miller	Death of a Salesman

Female Speech

वसंतसेना :	निर्लज्ज है तू मेघ जो आर्य के घर जाने के समय गरज-गरजकर मुझे भयभीत कर रहा है और अपनी धाराओं के हाथों से छू रहा है। हे इंद्र ! क्यों गरजता है मेघ ? मेरा मार्ग वर्षा से क्यों रोक रहा है ? इंद्र, अहल्या के प्रेम में तुमने अपने को गौतम बताया था, आज मेरे दुःख को समझो और इस मेघ को हटा लो ! गरज लो, बरस लो, या सौ-सौ वज्र गिरा लो इंद्र ! लेकिन आज मेरी राह रोक पाना असंभव है। मेघ बरसता है, बरसे निष्ठुरता पुरुषों का स्वभाव ही है ! परंतु नारी हृदय का दुःख विद्युत् क्या तू भी नहीं समझ पाती ?

नाटक का नाम: मृच्छकटिक
नाटककार का नाम : शुद्रक

पत्नी :	लालसा कि जिससे रूप तूने सजाया था क्या शराब में धुत थी ? क्या वह सो गयी थी ? कि अब जब वह जागी है बुझी बुझी बीमार आँखों से अपनी पस्ती पर पछताती है मैं अब यह समझी हूँ कि यही तेरा प्यार है क्या तू उतना ही पराक्रमी होने से डरता है जितना तू लोभी है? चाहता रहेगा तू वह जिसको जीवन का मानता परम धन है । औं' अपनी ही आँखों में कायर बनकर जियेगा तू उस बिलार की तरह जो मछली ताकती खड़ी रहती है तटपर पानी में भसने का साहस नहीं करती ? तो वह कौन पशु था जिसने मुझको तेरा मनोरथ बतलाया था ? वह तू ही था और तब तू मनुष्य था और अगर अब से कुछ और आगे जायेगा तो मनुष्य ही होगा और अधिक जब न जगह निश्चित थी औ' न समय दोनों ही तुझको जुटाने थे अब वे आप ही आप आन जुटे हैं यहाँ और इस अनुकूलता से तू घबराया है मैं पिला चुकी हूँ दूध और जानती हूँ प्यार आँचल में कैसे उमड़ता है पर गोदी में पड़े इकटक निहारते दुधमुँहे के मुँहे से मैं छुड़ा लेती स्तन पटक कर कपार फोड़ डालती अगर कोई प्रण ऐसा किये हुए होती तेरी तरह

नाटक का नाम : बरनम वन
नाटककार का नाम : शेक्सपियर

लक्ष्मी :	(एकाएक साहस करके) शशश बिल्कुल नहीं! चिल्लाओ नहीं! [निश्चेष्ट पड़ी चम्पा को दखती हुई।] चलों कोई बात नहीं। पापी तो थी ही मर के नरक में ही जायेगी। मैं तो पुण्यवान् हूँ। मेरे पास बहुत पुण्य है। मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। तुम्हारी देखभाल ठीक से करूंगी मैं। तुम्हारी गोद में मरूँगी। तुम डरो नहीं। हाँ सच। चलो, हम लोग इसको जल्दी से गाड़ दें चलके-कहीं पर? बाहर नहीं ... बाहर नहीं ... यहीं पर... घर के भीतर ही। ... कह देना कि भाग गयी घर से ... कोई कुछ मूछेगा नहीं ... पर कोई पूछेगा तो मैं कह दूँगी उसे कि वह भाग गयी ... अपने से चली गयी ... मैं भगवान की कसम खाकर कह दूँगी। उसे सब पता है। वह तुम्हें पाप नहीं लगने देगा। मैं उससे कह दूँगी कि वह मेरा पुण्य तुम्हें दे दे। तुम्हारे लिए सब करूँगी मैं ... हाँ ... [जल्दी से तस्वीर पर माथा टेककर नमस्कार करती है। सखाराम के माथे से भी तस्वीर लगाती है। वह निश्चल है। लक्ष्मी तस्वीर को नीचे रखकर बार-बार उस पर अपना माथा घिसती है। आँखें बन्द कर प्रार्थना करती है।] (आँख खोलकर) चलो ... उठो अब। काम में लगो। बगिया से कुदाल ले आओ जाके। मैं रसोई में जगह खाली करती हूँ। देर न करो। सवेरा हो जायेगा तो बात फैल जायगी। रात भगवान की होती है। उसी का राज रहता है। आदमी दुष्ट होते हैं, पापी होते हैं, नीच होते हैं जैसे यह थी।

नाटक का नाम : सखाराम बाइन्डर
नाटककार का नाम : विजय तेंदुलकर